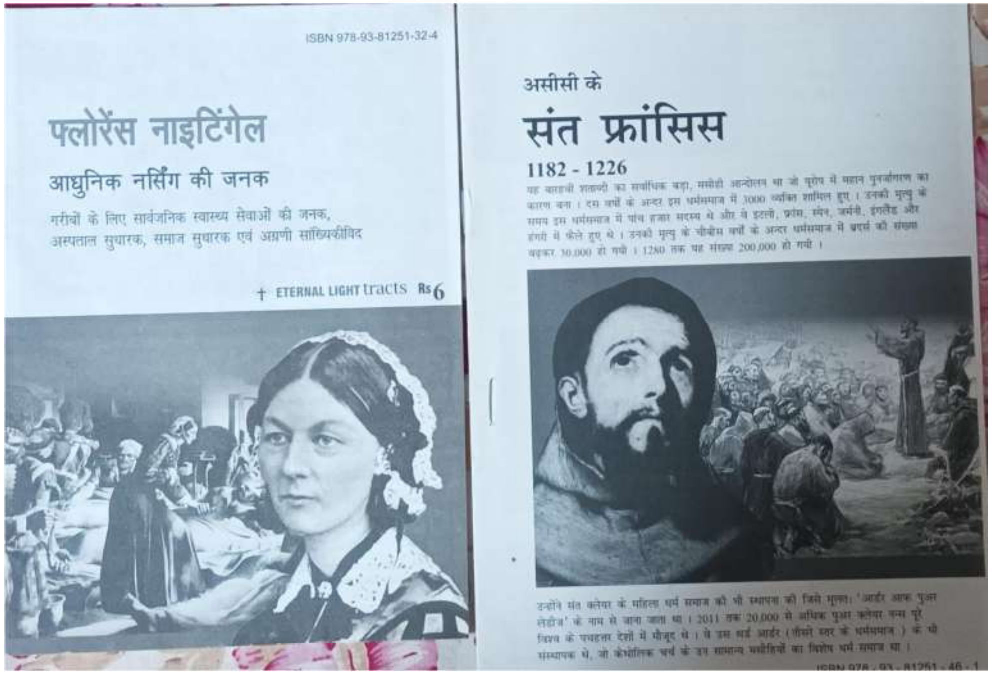
ISBN 978-93-81251-32-4
फ्लोरेंस नाइटिंगेल
आधुनिक नर्सिंग की जनक
गरीबों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की जनक,
अस्पताल सुधारक, समाज सुधारक एवं अग्रणी सांख्यिकीविद
ETERNAL LIGHT tracts Rs 6
असीसी के
संत फ्रांसिस
1182 - 1226

भूमिका-स्टीवन मेक डोनाल्ड
"इतना सशक्त कि पढ़ने में
यदा कदा आँसू बाधक बन जाते हैं।"
क्यों क्षमा
किया जाए?
अनुवादक: मंजु ज्योत्स्ना
लेखक-जोहान्न क्रिस्टोफ अर्नाल्ड

सत्य भारती
पुस्तक लोकार्पण
अंतरा
(आँचल)

जुलूस-तंत्र
- डॉ० मंजु ज्योत्स्ना

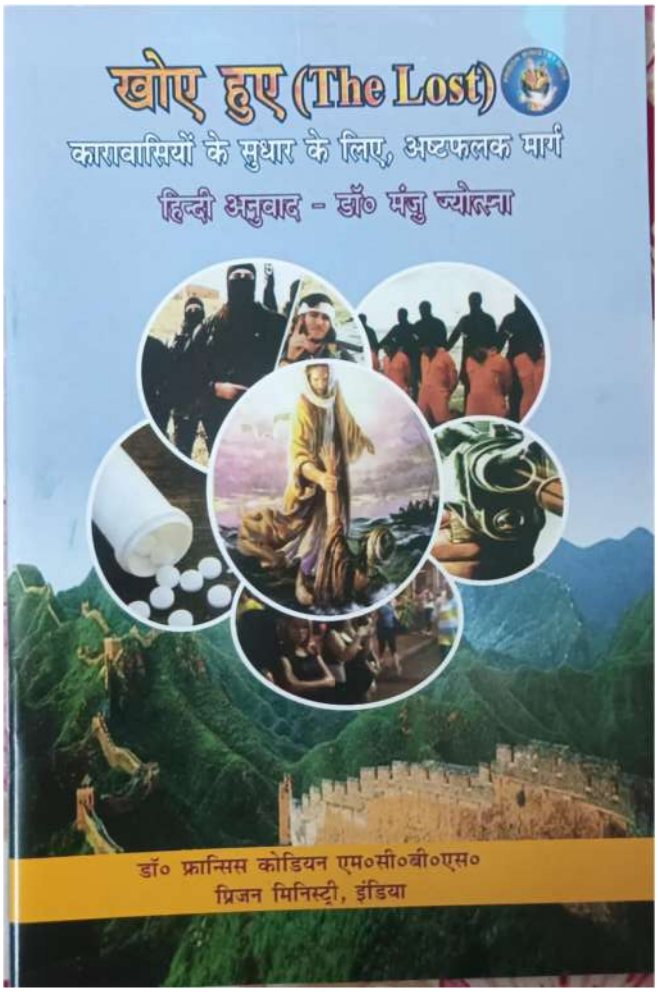
खोए हुए (The Lost)
कारावासियों के सुधार के लिए, अष्टफलक मार्ग
हिन्दी अनुवाद - डॉ० मंजु ज्योत्स्ना
डॉ० फ्रान्सिस कोडियन एम०सी०बी०एस०
प्रिजन मिनिस्ट्री, इंडिया

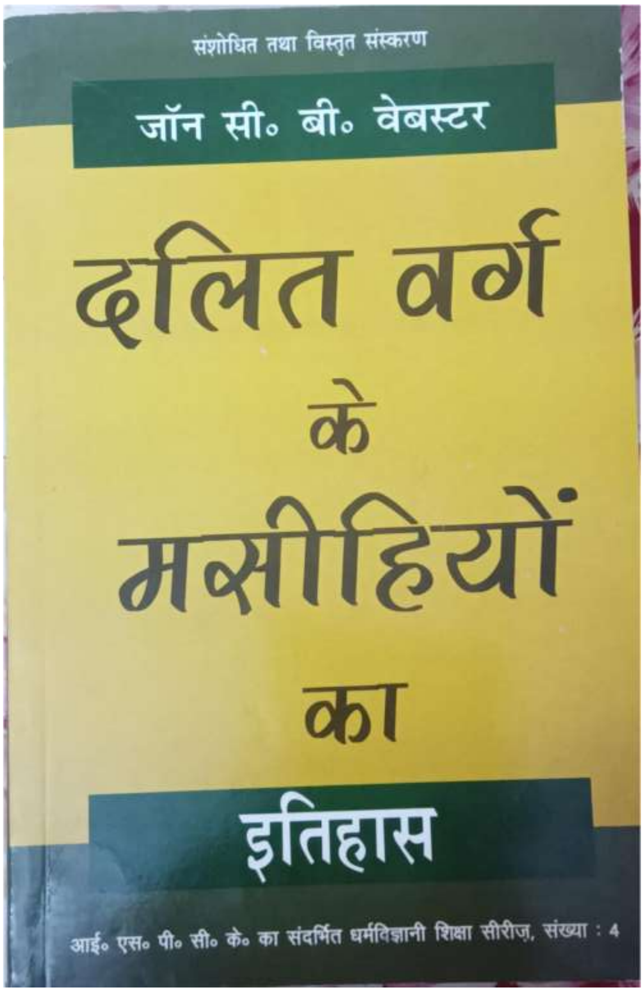
संशोधित तथा विस्तृत संस्करण
जॉन सी० बी० वेबस्टर
दलित वर्ग
के
मसीहियों
का
इतिहास
आई० एस० पी० सी० के० का संदर्भित धर्मविज्ञानी शिक्षा सीरीज़, संख्या : 4

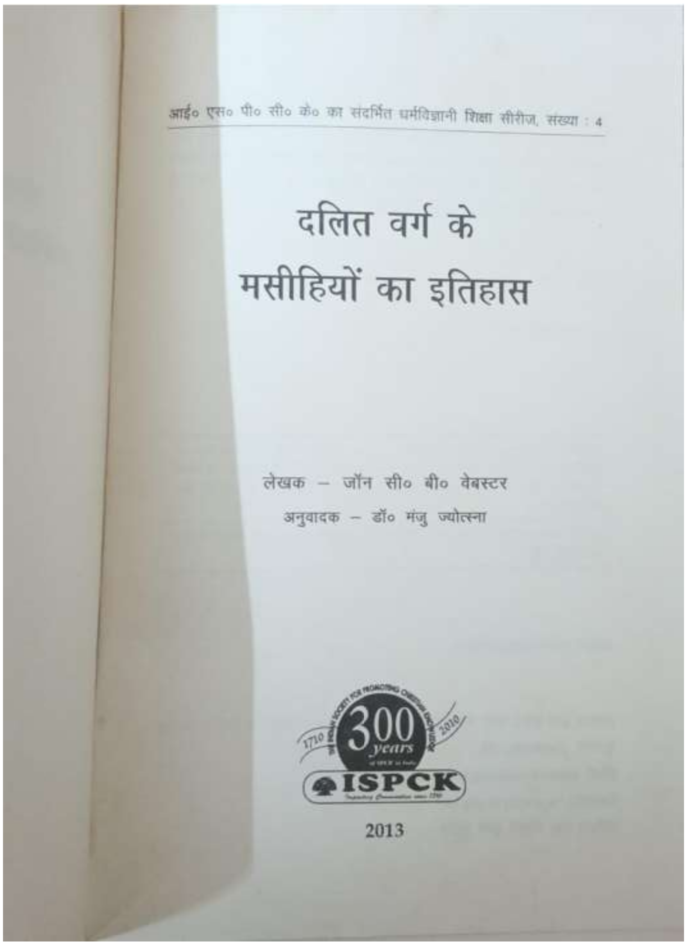
आई० एस० पी० सी० के० का संदर्भित धर्मविज्ञानी शिक्षा सीरीज़, संख्या : 4
दलित वर्ग के
मसीहियों का इतिहास
लेखक – जॉन सी० बी० वेबस्टर
अनुवादक – डॉ० मंजु ज्योत्स्ना
ISPCK
2013

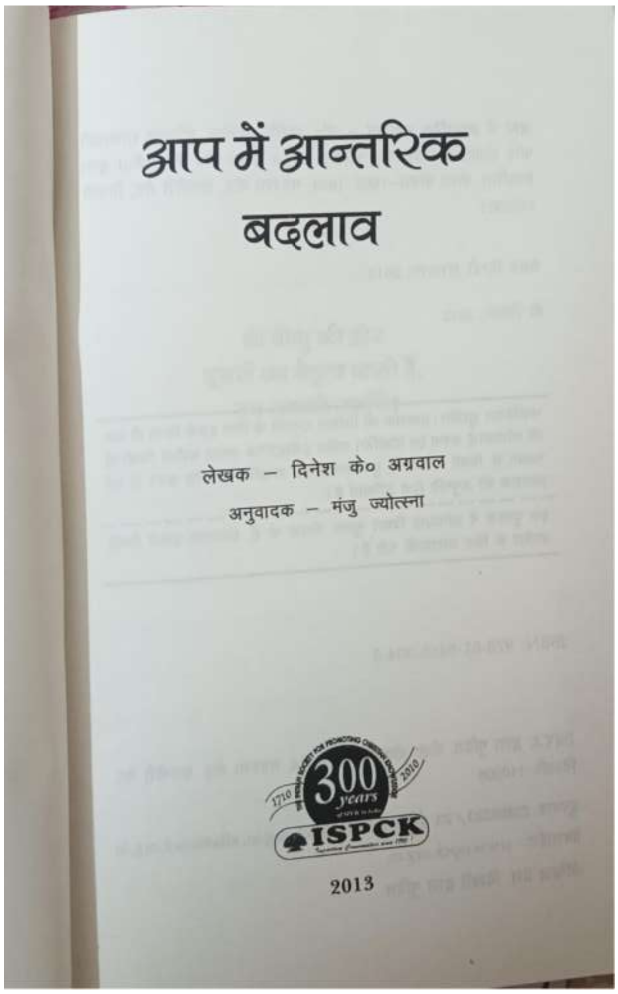
आप में आन्तरिक
बदलाव
लेखक – दिनेश के० अग्रवाल
अनुवादक – मंजु ज्योत्स्ना
ISPCK
2013

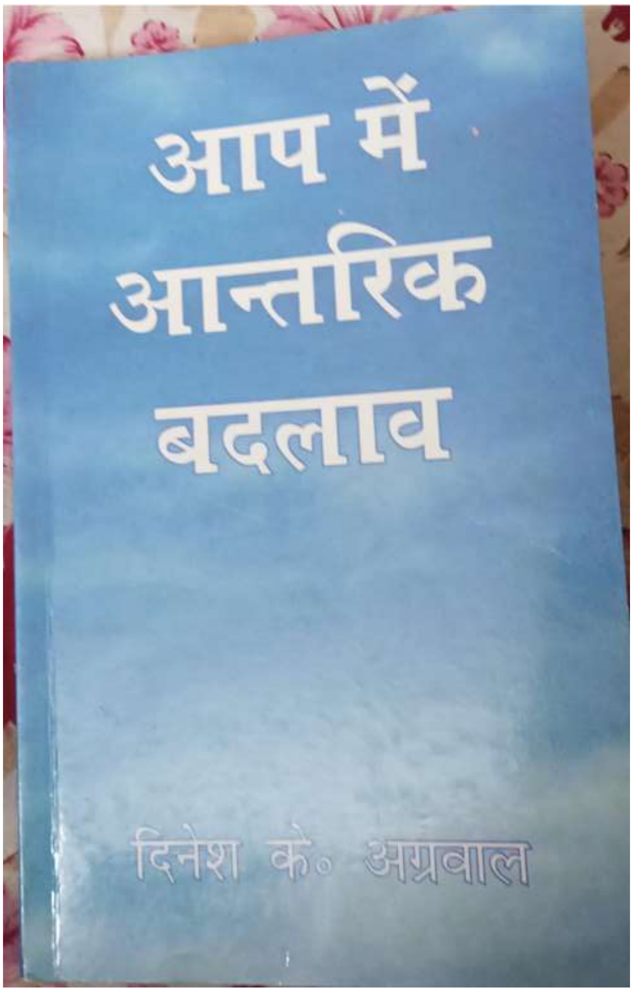
आप में
आन्तरिक
बदलाव
दिनेश के॰ अग्रवाल

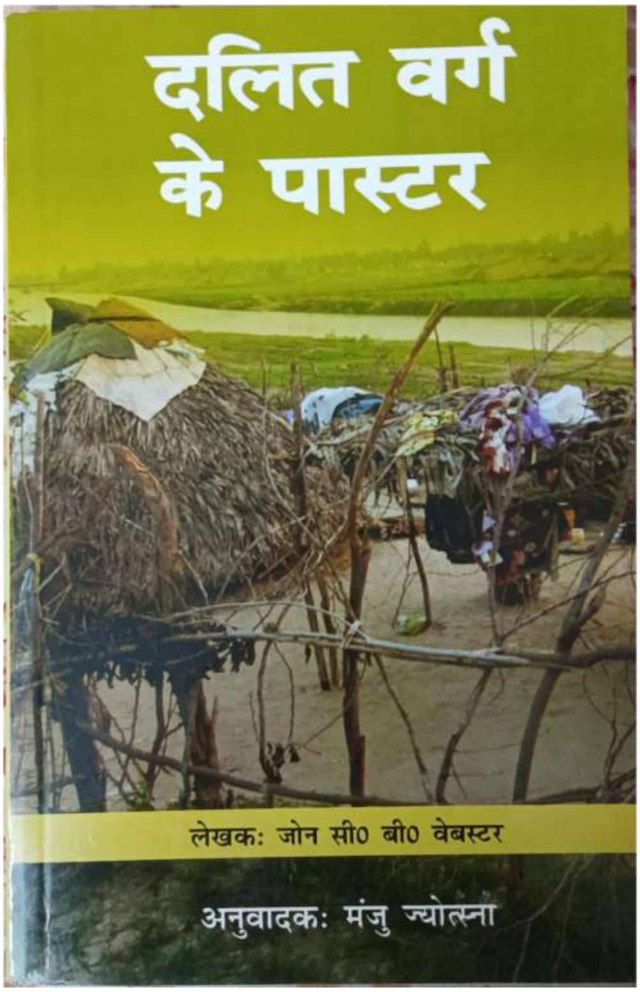
दलित वर्ग
के पास्टर
लेखक: जोन सी0 बी0 वेबस्टर
अनुवादक: मंजु ज्योत्स्ना

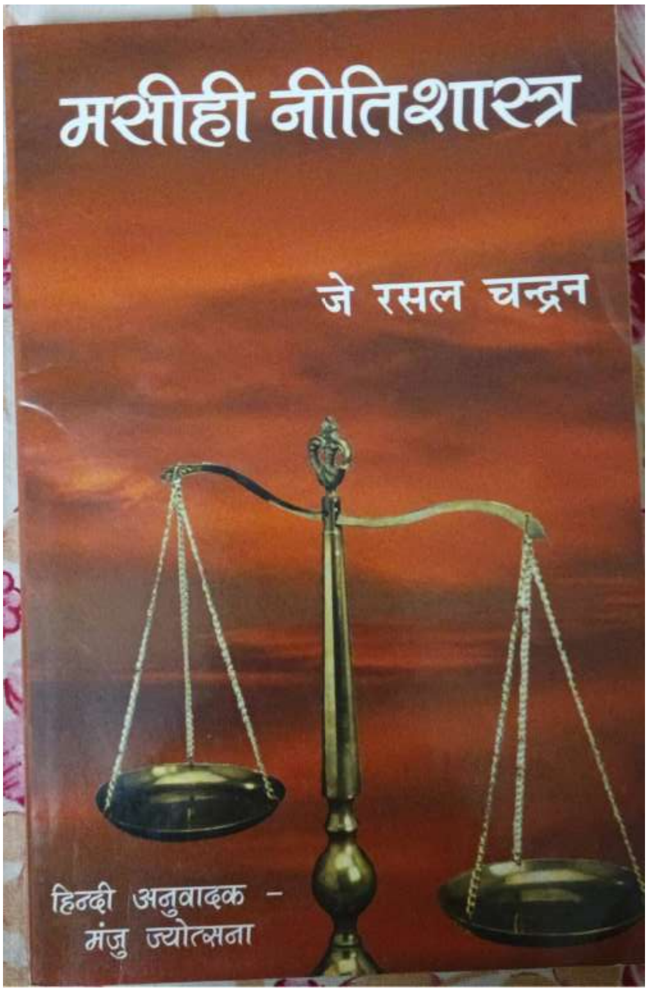
मसीही नीतिशास्त्र
जे रसल चन्द्रन
हिन्दी अनुवादक -
मंजु ज्योत्सना

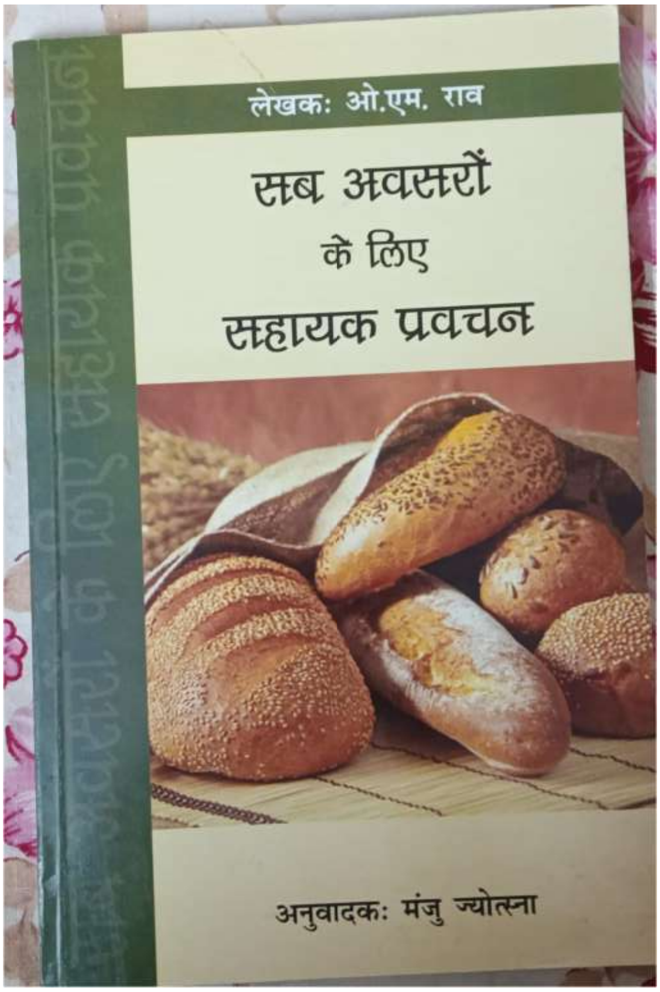
लेखक: ओ.एम. राव
सब अवसरों
के लिए
सहायक प्रवचन
अनुवादक: मंजु ज्योत्स्ना

उत्तर भारत की सभाएं, 1922

सुन्दर सिंह का स्वास्थ्य बुरी तरह से गिरने लगा, 1924

सुन्दर सिंह ने खुद ही आहुति दे दी, 1924

उनकी मृत्यु, मई 1929

पुरोहित रिडेल और डॉ॰ टेलर तिब्बत की यात्रा पर निकले सुन्दर सिंह की खोज के लिए

हिन्दी अनुवाद – डॉ॰ मंजु ज्योत्स्ना

Order online amazon.in | flipkart | eternallightbooks.com
Printed & Published at 4, G Glory Appt, Trimartichowk, Untwadi, Nashik - 422008
eternallightbooks.com

साधु सुन्दर सिंह

1889 - 1929

भारत के आध्यात्मिक गुरु
तिब्बत के मिशनरी

अपने अल्पकाल के जीवन में उन्होंने तिब्बत का 19 बार भ्रमण किया। सुन्दर सिंह ने कहा था प्रत्येक वर्ष जब वे तिब्बत जाते थे कभी वे आशा नहीं करते थे कि जिन्दा वापस लौटेंगे। वे येसुमसीह के लिए शहीद होने के लिए सदैव तत्पर थे।

ISBN 978 - 93 - 81251 - 46 - 1

बारथोलम्यूस

जीगनबाल्ग

1682 - 1719

भारत में आगत प्रथम मिशनरी

उन्होंने प्रथम प्रोटेस्टेन्ट चर्च की स्थापना की तथा भारतीय भाषा में नए विधान का प्रथम अनुवाद किया, प्रथम तमिल शब्दकोश का संकलन किया, प्रथम बालिका विद्यालय का आरंभ किया, प्रथम टाइप फाउन्ड्री और कागज का कारखाना।

पीटर वाल्डो

1140 - 1215

चर्च के प्रथम सुधारक & बारहवीं शताब्दी के आत्मिक अगुवा
प्रथम प्रोटेस्टेन्ट आन्दोलन (1170) और
वाल्डेनसियन चर्च के प्रथम संस्थापक

यह महान धर्मसुधार आन्दोलन मार्टिन लूथर के 340 वर्षों पूर्व आरंभ हुआ था। इसी धर्मसुधार ने सोलहवीं शताब्दी के धर्मसुधार की नींव रखी।

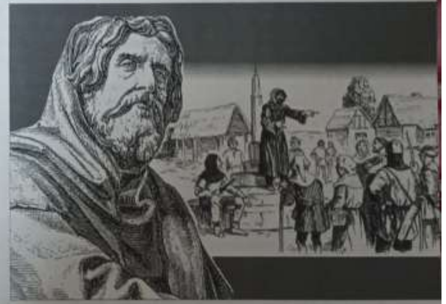

"विश्वास कर्म के बिना मृत है"। हमने संसार का परित्याग कर दिया है; जो कुछ हमारे पास था उसे, दरिद्रों को दे दिया जैसा प्रभु ने सलाह दी थी। हमने इस ढंग से दरिद्र रहने का संकल्प लिया कि हमें कल की चिन्ता ही नहीं, न हम स्वर्ण, न ही चाँदी ग्रहण करते हैं, भोजन और वस्त्र जो उस दिन के लिए पर्याप्त हो, इससे अधिक किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते। हमारा संकल्प है कि हम सुसमाचार के निर्देशों का आज्ञा की तरह अनुपालन करें।

ISBN 978 - 93 - 81251 - 46 - 1

वेलेस्ली बेली

1846 - 1937

कोढ़ियों के पिता,
द लेप्रेसी मिशन के संस्थापक

वेलेस्ली बेली ने भारत, चीन और एशिया के दस हजार कोढ़ियों की देखभाल किया और ख्रीस्त के प्रेम से परिचित कराया। उन्होंने 'द लेप्रेसी मिशन' की स्थापना की, जिसने बारह देशों में 87 आश्रमों का निर्माण किया, जहाँ 15000 से अधिक कोढ़ियों के पूर्णकालिक देखभाल की गयी, उन्हें भोजन, आश्रय, वस्त्र, रोजगार और आत्मिक शिक्षा दी गयी।

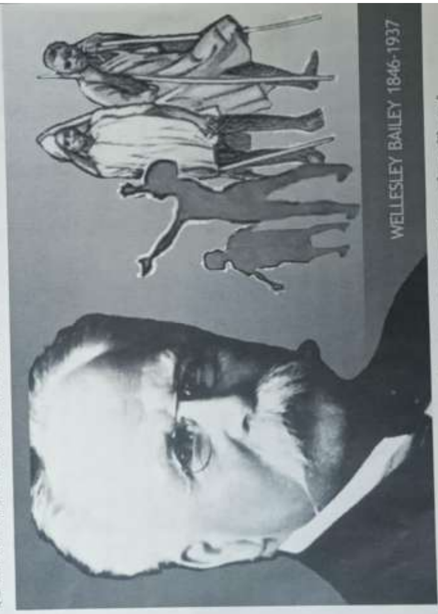

1917 में 71 वर्ष की उम्र में वेलेस्ली बेली अपने कार्य से निवृत्त हो गए और उन्होंने कार्य युवा लोगों के हाथों सौंप दिया। उन्होंने अपने जीवन के श्रेष्ठ 50 वर्ष कोढ़ियों की सेवा में लगा दिए थे। जब वे सेवानिवृत्त हो रहे थे तब मिशन द लेप्रेसी 14,000 कोढ़ियों को 12 देशों में पूर्णकालिक सेवा प्रदान कर रहा था, उन्हें भोजन, आश्रय, वस्त्र और रोजगार देकर।

eternallightbooks.com

विद्यालय का विभाग था और तीसरा कृपा सदन (पतित महिलाओं का आश्रय)। इनके अलावा तीन और विशेष गृह थे – प्रीतिसदन (बुजुर्गों के लिए और विकलांगों या कमजोर महिलाओं के लिए आश्रम गृह), सदानन्द सदन (लड़कों के लिए गृह) और शांतिसदन (अंधों के लिए गृह)।

ऐसी महिलाओं को आध्यात्मिक निर्देश प्रदान करना

रमाबाई ने कई मिशनरियों और सुसमाचार प्रचारकों को केडगाँव आने का आमंत्रण दिया कि वे उन महिलाओं को जो स्वस्थ और सशक्त होने लगी हैं, ईश्वर के वचन की शिक्षा दें। इस मठ के पश्चात रमाबाई ने रिपोर्ट दिया कि सभी लड़कियों ने येशु ख्रीस्त को स्वीकार कर लिया है और उनके हृदय में जो सही बदलाव आया है उसके लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं जब वे दूसरी लड़कियों की सेवा और सहायता करती हैं।

मराठी बाइबिल का सामान्य मराठी में अनुवाद, 1905–1922

1905 में रमाबाई ने सामान्य लोगों के लिए मराठी बाइबिल का सामान्य मराठी भाषा में नए ढंग से अनुवाद कार्य का आरंभ किया। बाइबिल का मराठी अनुवाद सौ वर्ष पहले ही हो चुका था लेकिन वह शास्त्रीय या कठिन मराठी भाषा में था। इस अनुवाद के लिए रमाबाई ने कई वर्ष इसके पांच विभिन्न भाषान्तरों के शब्द और पुराने तथा नए नियम के मुहावरों के अन्तरपंक्ति अनुवाद तैयार किए इसमें उन्हें कई वर्ष लगे। उन्होंने अनुमान लगाया था इस काम में सात वर्ष लगेंगे लेकिन इसमें अट्ठारह वर्ष लग गए। उन्होंने 1922 में अपनी मृत्यु के कुछ दिनों पहले इसे समाप्त किया था। वह पहली महिला थीं जिन्होंने पूरे बाइबिल का दूसरी भाषा में अनुवाद किया।

■ 1919 में ब्रिटिश सरकार ने पंडिता रमाबाई को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए कैसर-ए-हिन्द का मेडल दिया।

रमाबाई का देहान्त, अप्रैल 1922

1922 के आरम्भ में रमाबाई को लगा जैसे उनको अपने घर की बुलाहट आ गयी है अतः उन्होंने मिस लिस्सा हेस्टी, एक अंग्रेज मिशनरी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया यह समझ कर कि उनका कार्य एकदम उसी ढंग से कार्यान्वित होगा। कुछ दिनों तक वे अत्यन्त कमजोरी की स्थिति में रहीं फिर भी अपने उस बड़े कार्य पवित्र बाइबिल के मराठी अनुवाद को उन्होंने समाप्त किया। हम कह सकते हैं कि शब्दशः वे 'येशु में सो गयीं' 5 अप्रैल 1922 की सुबह में। उन्हें स्टेटस्मेन (राजनेता) की तरह दफनाया गया और पूरे विश्व में उनका शोक मनाया गया। ■

हिन्दी अनुवाद – डॉ॰ मंजु ज्योत्स्ना

Order online amazon.in | flipkart | eternallightbooks.com
Printed & Published at 4, G Glory Appt, Trimartichowk, Untwadi, Nashik - 422008
eternallightbooks.com

पंडिता रमाबाई

हजारों विधवाओं और अनाथों की माता
उन्नीसवीं शताब्दी की आध्यात्मिक नेत्री
बाइबल की अनुवादक, शिक्षिका और राष्ट्रीय सुधारक

1896 के अकाल में रमाबाई ने 700 से अधिक लड़कियों का उद्धार किया। 1900 के अकाल में रमाबाई और उसकी टीम ने गुजरात, राजपूताना और उसके आसपास के स्थानों से 1500 से अधिक लड़कियों का उद्धार किया। 1900 के मध्य में केडगाँव के मुक्ति मिशन में लगभग 2000 अन्तेवासी थे।

eternallightbooks.com

ETERNAL LIGHT BOOKS

PAGES 16 | RS 4

जोन वाइक्लीफ्फ

1324 - 1384

चौदहवीं शताब्दी के धार्मिक अगुवा

चौदहवीं शताब्दी के धर्मसुधार के संस्थापक,

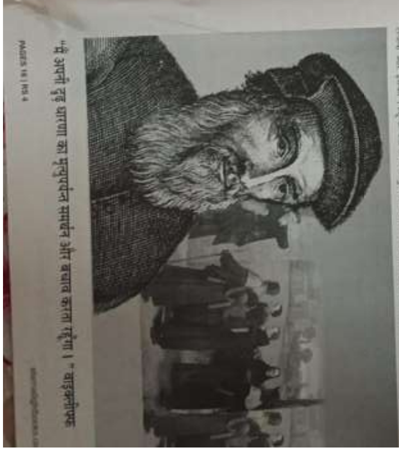

"मैं अपनी दृढ़ धारणा का मृत्युपर्यन्त समर्थन और बचाव करता रहूँगा।" वाइक्लीफ्फ

हिन्दी अनुवाद - डॉ॰ मंजु ज्योत्स्ना

Order online amazon.in | flipkart | eternallightbooks.com

Printed & Published at 4, G Glory Appt, Trimurtichowk, Untwadi, Nashik - 422008

eternallightbooks.com

ETERNAL LIGHT BOOKS

PAGES 16 | RS 4

जेन हस

1369 - 1415

यूरोप के आत्मिक अगुवा, सुधारक और शहीद

उन्होंने अपना जीवन सत्य के विषय उपदेश देते हुए और रोमन केथोलिक चर्च की गलत शिक्षा से संघर्ष करते हुए समर्पित कर दिया । उन्होंने यूरोप में सच्ची मसीहियत के महत् पुनर्जागरण और सुधार का कार्य किया ।

"अत: विश्वस्त मसीही मृत्युपर्यन्त सत्य की खोज करते हैं, सत्य को सुनते हैं, सत्य को सीखते हैं, सत्य को प्यार करते हैं, सत्य बोलते हैं, सत्य का पालन करते हैं । क्योंकि सत्य आपको पाप से और शैतान से मुक्त करता है और आत्मा को नष्ट होने से बचाता है ।"
जेन हस का कथन 'विकलेड वाइरी' के 'ओपेरा ओमनिया' से ।

ISBN 978 - 93 - 81251 - 46 - 1

ETERNAL LIGHT BOOKS

PAGES 16 | RS 4

विलियम कैरी

1761 -1834

मसीहियत के विशालतम विस्तार के जनक

भारतीय चर्च के एक संस्थापक

चालीस भारतीय भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद, छपाई तथा प्रकाशन, भारत में पहले विश्वविद्यालय की संस्थापक

देवनागरी, तेलगु, मराठी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के मुद्रण (छपाई) के स्थापक। भारत में पहले अखबार एवं बचत बैंक की स्थापना । भारत में पहले अखबार एवं बचत बैंक की स्थापना । भाप इन्जिन का परिचय भारत से कराने वाले तथा भारतीय लोहे के कारीगरों को इन्जिन के नमूने बनाने के लिए प्रोत्साहन देने वाले । विविध विषयों पर 132 से अधिक पुस्तकों की रचना ।

ISBN 978 - 93 - 81251 - 46 - 1

जॉर्ज मुलर

दस हजार अनाथों के पिता

ISBN 978-93-81251-05-8

✝ ETERNAL LIGHT tracts

Rs 6

Order online
amazon.in | flipkart | eternallightbooks.com
Printed & Published at 4, G Glory Appt, Trimurtichowk, Untwadi, Nashik - 422008
PAGE 16

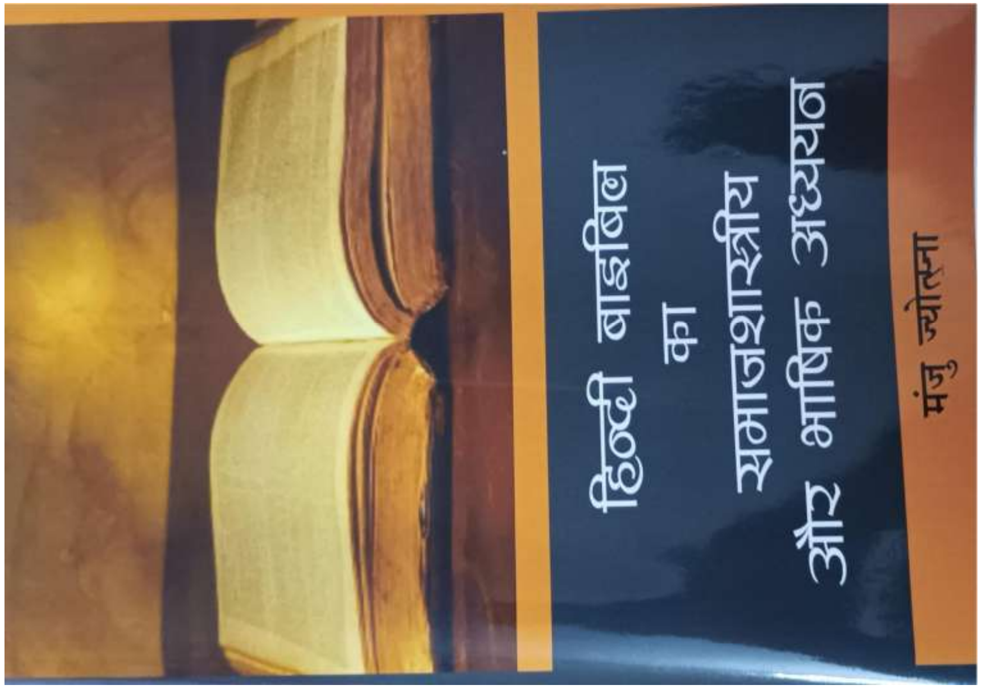
हिन्दी बाइबिल
का
समाजशास्त्रीय
और भाषिक अध्ययन
मंजु ज्योत्स्ना

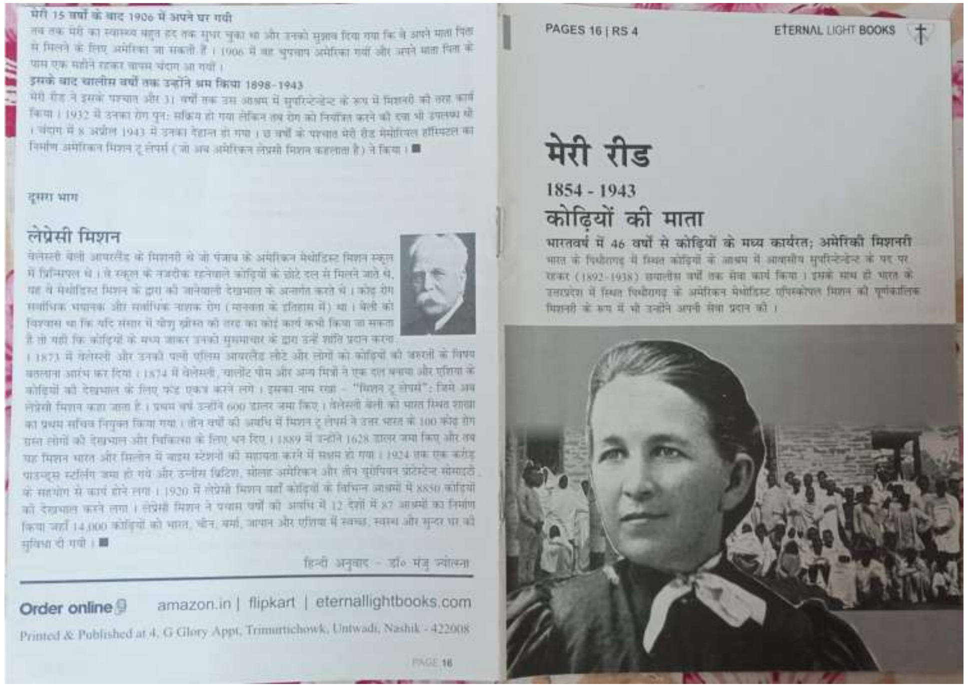
मेरी 15 वर्षों के बाद 1906 में अपने घर गयी
इसके बाद चालीस वर्षों तक उन्होंने श्रम किया 1898-1943
दूसरा भाग
लेप्रेसी मिशन
हिन्दी अनुवाद - डॉ० मंजु ज्योत्स्ना
Order online
amazon.in | flipkart | eternallightbooks.com
PAGES 16 | RS 4
ETERNAL LIGHT BOOKS
मेरी रीड
1854 - 1943
कोढ़ियों की माता
भारतवर्ष में 46 वर्षों से कोढ़ियों के मध्य कार्यरत; अमेरिकी मिशनरी

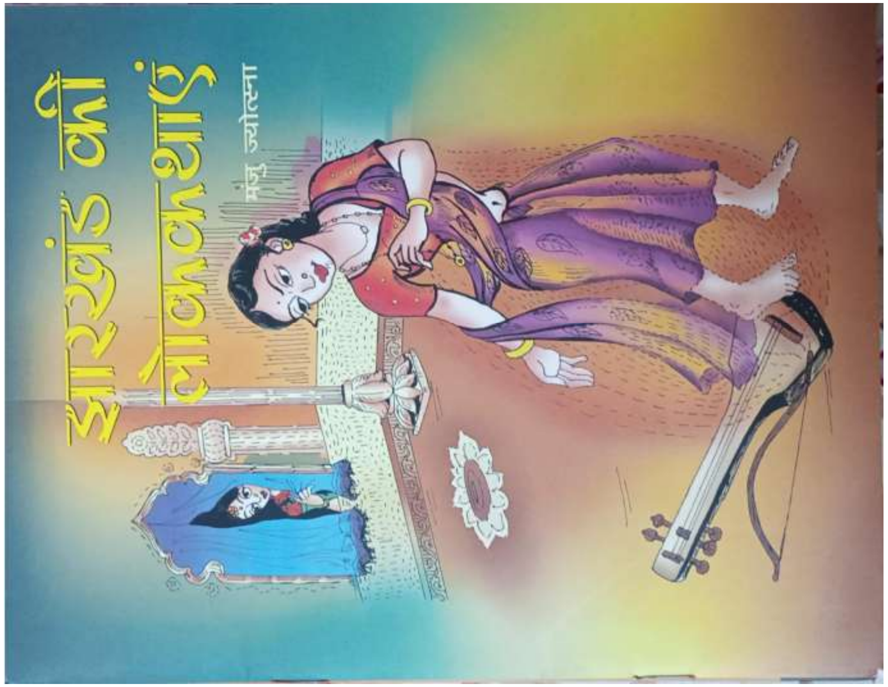
झारखंड की
लोककथाएं
मंजु ज्योत्स्ना

क्षण-मत्स्य
मंजु ज्योत्स्ना

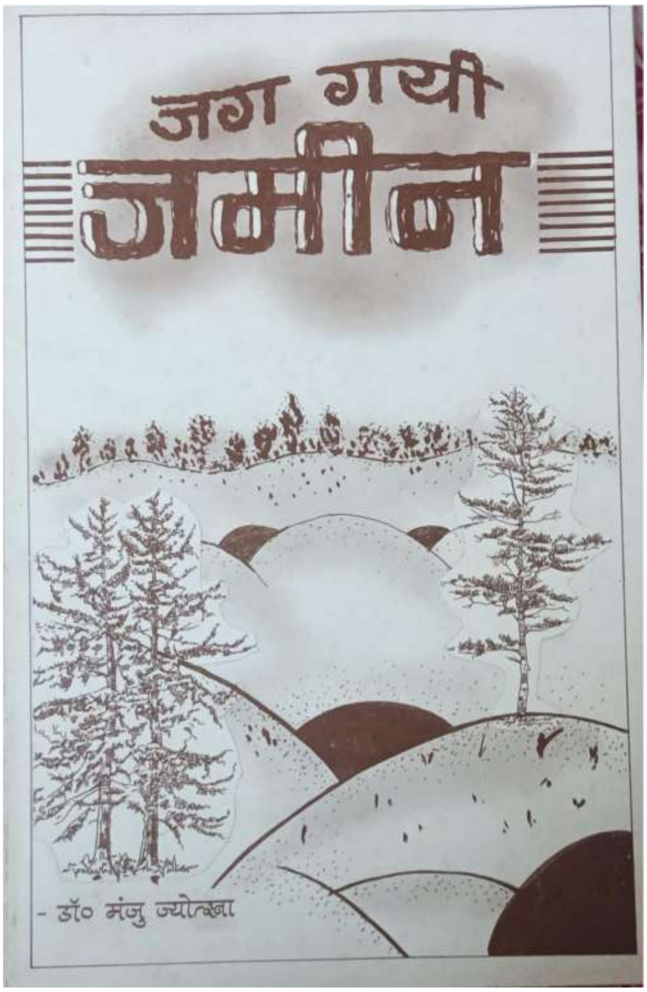
जग गयी
जमीन
- डॉ० मंजु ज्योत्स्ना

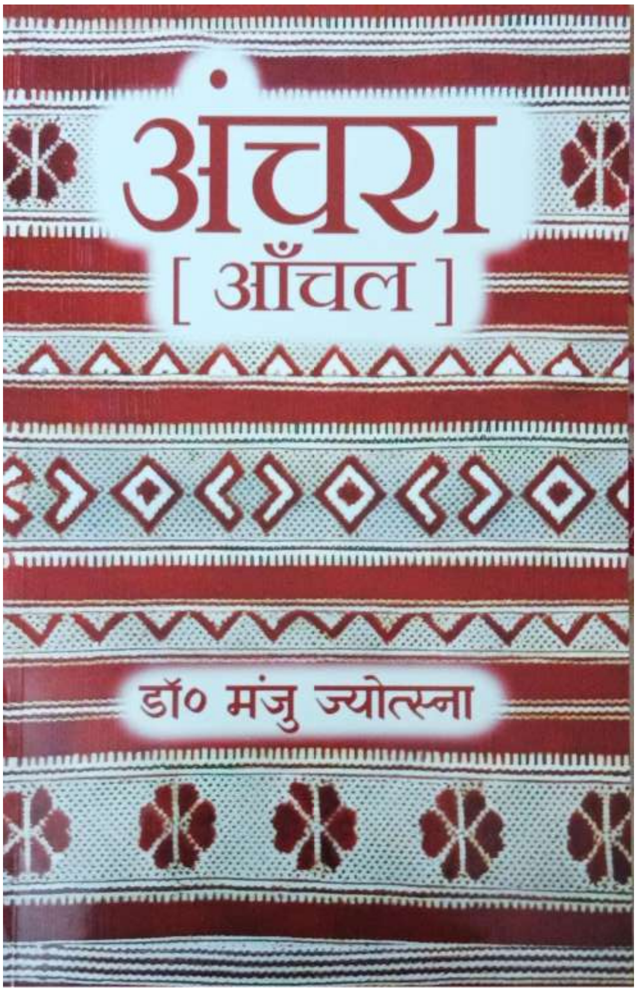
अंचरा
[आँचल]
डॉ० मंजु ज्योत्स्ना

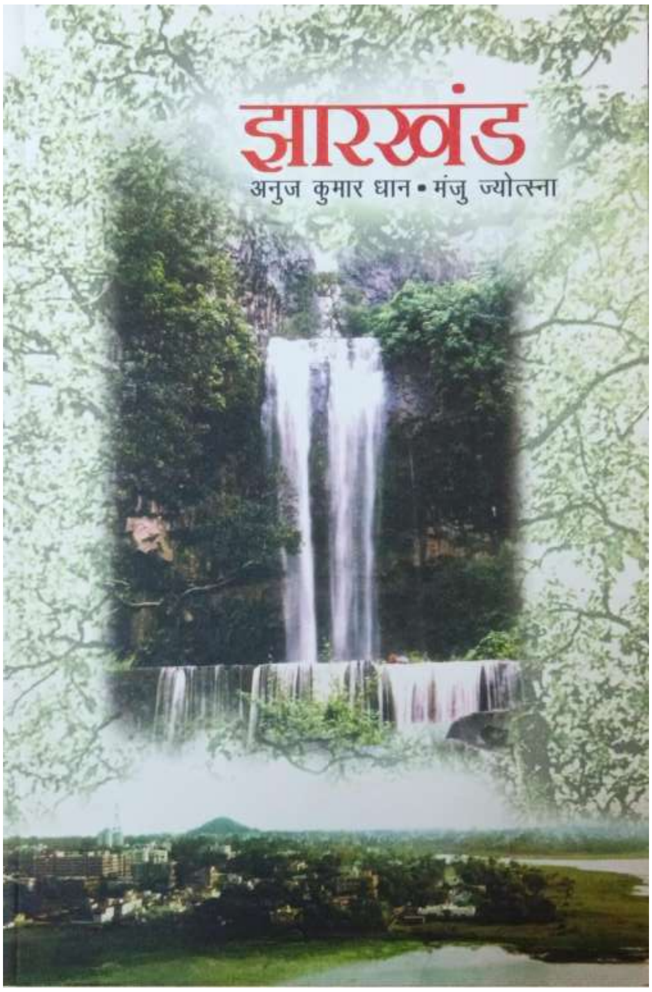
झारखंड
अनुज कुमार धान • मंजु ज्योत्स्ना

ईसा की लघुकथाएं
मंजू ज्योत्स्ना

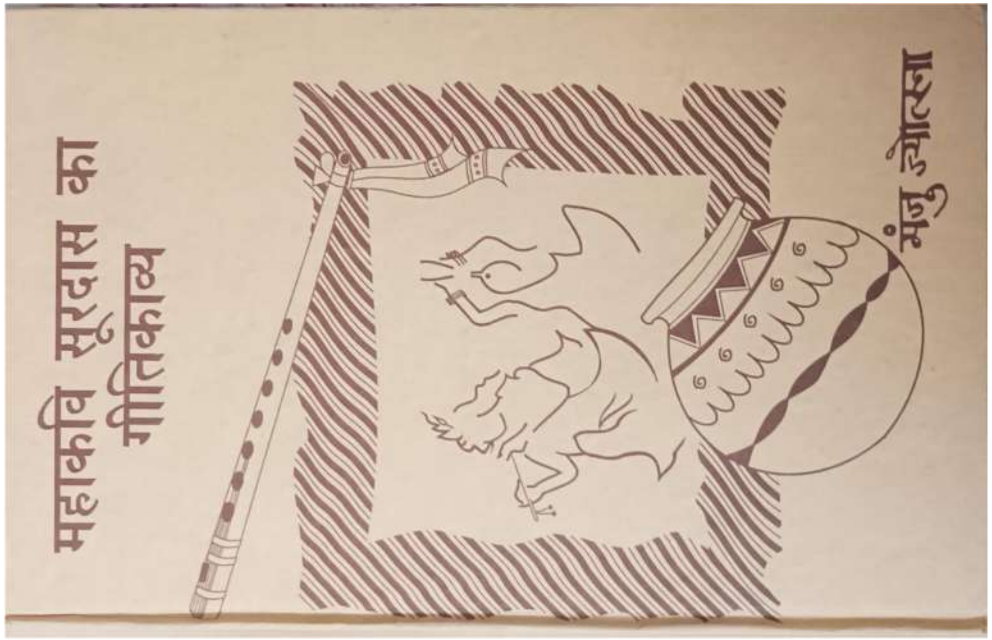
महाकवि सूरदास का गीतिकाव्य
मंजू ज्योत्स्ना

जयशंकर प्रसाद विचार मंच
राँची, झारखण्ड
जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान–2025
30 जनवरी 2025
सम्मान–पत्र
डॉ० मंजू ज्योत्सना, राँची
''साहित्य समाज की जीवंतता, संस्कृति की संजीवनी और विचारों का आलोक पुंज है।''
हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान एवं उपलब्धियों के लिए
आपको सम्मानित करते हुए हम अत्यंत गौरान्वित हैं।
आपके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।
कार्यकारी अध्यक्ष
दिनांक
सचिव

DR. MANJU JYOTSNA

TRIBAL CHALLENGE
EDGAR WALLACE
RONA JAFFE
MARK TWAIN

EDGAR WALLACE
RONA JAFFE Class

Jamshedpur Women's College
Governing Body Meeting
held on 13.06.2009

आमंत्रण
आप सादर आमंत्रित हैं
फ़ादर कामिल बुल्के जयंती
के अवसर पर
आयोजक:
हिन्दी विभाग एवं हिन्दी साहित्य परिषद्
3 सितम्बर 2024
सहयोग: IQAC, SXC, Ranchi
समय: सुबह 10 बजे।
स्थान - FR. C. DE BROUWER MEMORIAL AUDITORIUM
संत ज़ेवियर कॉलेज, राँची
मुख्य अतिथि :डॉ. मंजु ज्योत्स्ना
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग , राँची विश्वविद्यालय, राँची
विशिष्ट अतिथि: डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
वक्ता: डॉ. कमल कुमार बोस
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, संत ज़ेवियर कॉलेज, राँची।
डॉ. एच.के. सिंह
पूर्व प्रोफेसर,एक्सआईएसएस,राँची।

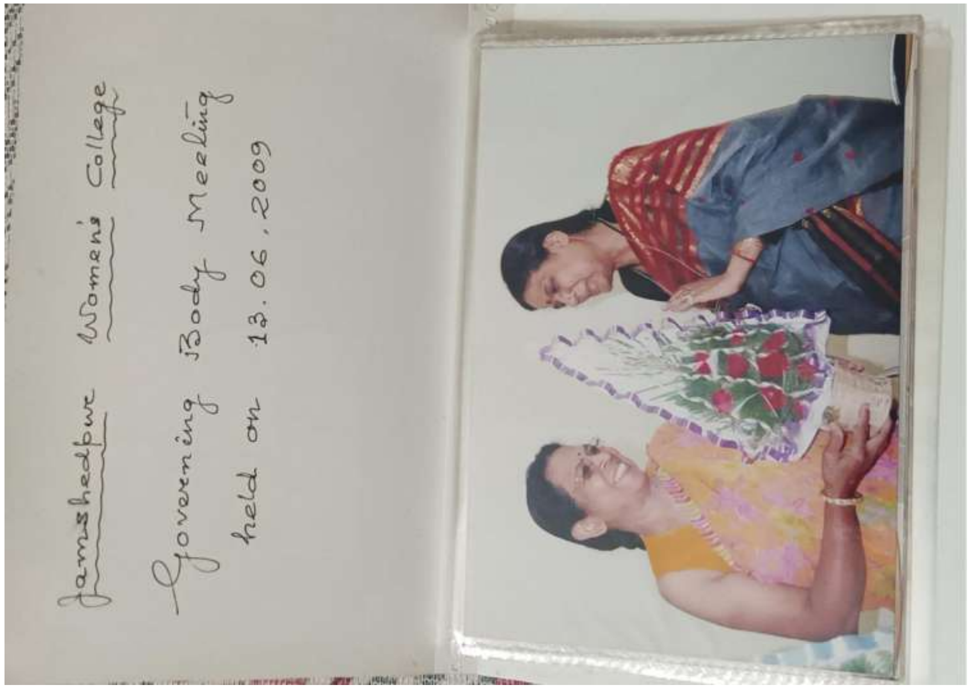
Jamshedpur Women's College
Governing Body Meeting
held on 13.06.2009

सत्य भारती, राँची
डॉ० कामिल बुलके पथ, राँची
पुस्तक लोकार्पण
अंचरा
{आँचल}
लेखिका: डॉ० मंजु ज्योत्सना
5 सितंबर, 2024, 11.00 बजे
संत जेवियर कॉलेज सभागार, राँची